Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A - II Sem Philosophy
CC-09 - Indian Linguistic trends

"Sphotavada: Criticism"

APR 2015 TUE 10 MAR

स्फोटवाद की समीक्षा (आलोचना)

स्फोटवाद शब्दनित्यत्ववाद, शब्दाद्वैतवाद तथा शब्दब्रह्मवाद के पर्याय रूप में जाना जाता है। वस्तुतः ये तीनों स्फोटवाद के रूप हैं। किन्तु नैयायिकों और मीमांसकों ने क्रमशः शब्दनित्यतावाद तथा शब्दाद्वैतवाद या शब्दब्रह्मवाद की आलोचना की है। मीमांसकों ने शब्दनित्यतावाद को स्वीकार किया है जब कि नैयायिकों ने शब्दानित्यतावाद का समर्थन किया है। नैयायिकों का मानना है कि शब्द की उत्पत्ति होती है, इसलिए उसका विनाश भी होता है। ध्वनि भी उत्पन्न और विनष्ट होती है। अतः प्राकृत ध्वनि के रूप में स्फोट की नित्यता असम्भव है। ध्वनि प्राकृत और वैकृत नहीं होती वह ध्वनि मात्र है। ध्वनि द्वारा ही वर्ण और शब्द की उत्पत्ति होती है। दीवाल पर टंगी घंटी तबतक चुप रहती है, जबतक उसे नहीं बजाया जाता है। क्योंकि घंटी को खींच देती है, घंटी आवाज करती है। किन्तु कुछ क्षण के बाद वह आवाज समाप्त हो जाती है। ढोल पर थाप पड़ने पर आवाज होती है थाप नहीं पड़ने पर वह मौन रहता है। स्पष्ट है कि ध्वनि की उत्पत्ति और विनाश होते हैं।

शब्द ध्वनि द्वारा ही
उच्चरित होता है। अतः शब्द भी
उत्पन्न और विनिष्ट होता है।
जैसे "कमल" शब्द का उच्चारण
होता है। हम पहले क, फिर म
और अन्त में ल वर्ण का उच्चारण
करते हैं। ये उच्चारण क्रम से होते
हैं। एक वर्ण (क) का उच्चारण समाप्त
होने पर दूसरा वर्ण (म) उच्चरित होता
है और दूसरे वर्ण का उच्चारण समाप्त
होने पर तीसरा वर्ण (ल) उच्चरित
होता है। ल के उच्चारण की समाप्ति
के साथ ही 'कमल' शब्द की उत्पत्ति
होती है और व्यक्ति वक्ता शब्द
का उच्चारण करता है तथा श्रोता
सुनता है। व्यक्ति यह (कमल) शब्द
समाप्त हो जाता है। अतः शब्द
उत्पन्न और विनष्ट होते हैं।
इनकी उत्पत्ति और विनाश संसार में
उत्पन्न होने वाले घट या वस्तुओं के
समान होते हैं। अतः वीचि तरंग
न्याय के आधार पर नैयायिकों
ने शब्द को अनित्य माना है। दूसरे
शब्दों में स्फोट की कल्पना निरर्थक है
नहीं निकला। यदि स्फोट नित्य
होता तो स्फोट की कल्पना है
निर्मूल और निरर्थक है। आज तक
किसी ने भी स्फोट को प्रमाणित नहीं
किया है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान
उपमान और शब्द - इन

चार प्रमाणों में से कोई भी प्रमाण स्फोट को सिद्ध करने में सक्षम नहीं है। हमें श्रोतेन्द्रिय द्वारा ध्वनि का प्रत्यक्ष होता है, न कि स्फोट का। अनुमान द्वारा भी, स्फोट की सिद्धि असम्भव है, क्योंकि अनुमान व्याप्ति (हेतु-साध्य के अविनाभावी सम्बन्ध) पर आधारित है। ध्वनि और स्फोट में व्याप्ति सम्बन्ध नहीं हो सकता। व्याप्ति सम्बन्ध बतलाता है कि एक हेतु से उसके अनुरूप साध्य ही सिद्ध हो सकता है। लेकिन 'कर' शब्द जैसे अनेक शब्द हैं जिनकी उच्चरित ध्वनि से उस शब्द का अनुरूप एक ही अर्थ (स्फोट) नहीं निकलता है, बल्कि 'कर' का अर्थ टैक्स और हाथ दोनों है। ये संज्ञा-वाचक शब्द हैं। पर 'कर' का अर्थ क्रियावाचक रूप में भी होता है। 'कर' का तात्पर्य 'करना' क्रिया से भी है। अतः कर और उसके अर्थ (स्फोट) में अविनाभावी सम्बन्ध अर्थात् व्याप्ति नहीं हो सकती। जहाँ तक उपमान से स्फोट की सिद्धि की बात है, तो उपमान समानता पर आधारित होता है। शब्द और स्फोट में समानता नहीं हो सकती, क्योंकि एक ही पद है, समानता दो पदों में पायी जाती है। शब्द प्रमाण भी 'स्फोट' को सिद्ध करने में

'स्फोट' सोमगर्भ है। वेदादि ग्रंथों में
'स्फोट' शब्द का प्रयोग नहीं
केवल वाक या भाषा शब्द का प्रयोग
है। वाक वाणी को कहते हैं। वाणी
ध्वनि द्वारा उच्चरित होती है। गुण
और अनात्मक होती है। ध्वनि में
परिवर्तन के कारण वाणी या भाषा
परिवर्तित होती है। अतः स्फोट
नित्य नहीं हो सकता। यदि स्फोट
को नित्य माना जाय तो उसे
इसी प्रकार सदैव सुना जाना
चाहिए जिस प्रकार शब्द को सुना
जाता है। शब्द आकाश द्रव्य
का गुण है। आकाश के
समान स्फोट को भी श्रोत्र
में नित्य होना चाहिए। यदि स्फोट
नित्य है तो वह शब्द सम गुण है
अतः शब्द और स्फोट दोनों
को सदैव श्रोत्रेन्द्रिय में नित्य होना
चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं होता।
अतएव स्फोट की कल्पना
व्यर्थ है। भर्तृ मेद के शब्दों में
"वर्ण समूह (शब्द) से स्वतंत्र
वैयाकरणों के शब्द स्फोट की नित्य
की कल्पना आवश्यक नहीं है।"

नैयायिकों की एक आपत्ति और भी है। स्फोट की
अभिव्यक्ति एक-एक वर्ण से
होती है या सभी वर्ण एक साथ
मिलकर करते हैं। यदि एक-एक

APR 2015
M T W T F S S
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30
SAT 14 MAR
WK 11 (073-292)

वर्ण से स्फोट की अभिव्यक्ति मानी जाए तो मात्र एक वर्ण ही अर्थ देने में सक्षम होगा, इससे वर्ण की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। 'क' वर्ण का उच्चारण ही 'कलम' या 'कमल' का अर्थ प्रकाशित करने में सक्षम हो जाए पर हम अपने व्यावहारिक अनुभव में ऐसा नहीं देखते हैं। अतः एक-एक वर्ण स्फोट की अभिव्यक्ति करने में असमर्थ है। अब यदि मान लिया जाए कि सभी वर्ण एक साथ मिलकर स्फोट की अभिव्यक्ति करते हैं, तो यह असम्भव है क्योंकि वर्ण क्रमपूर्वक ही स्फोट की अभिव्यक्ति होती है। सभी वर्णों का परस्पर मिलना तो असम्भव ही है। अतः स्फोटवाद खण्डित नहीं होता है।

परन्तु नैयायिकों की इस आलोचना का उत्तर वैयाकरणों ने दिया है। वस्तुतः नैयायिक ध्वनि और शब्द को एक मान लेते हैं और वे शब्द की उत्पत्ति-विनाश की बात करते हैं। वस्तुतः शब्द की न तो उत्पत्ति होती है और न ही उसका विनाश होता है। वह उत्पत्ति विनाश से परे है। इसलिए शब्द तो नित्य है। ध्वनि की उत्पत्ति होती है और उसका विनाश होता है। ध्वनि शब्द को उत्पन्न या विनष्ट नहीं करती है, बल्कि

SUN 15

ही अभिव्यक्त करती है। अतः शब्द की उत्पत्ति नहीं होती है, स्फोट की केवल उच्चारण द्वारा अभिव्यक्ति होती है। नैयायिकों ने शब्दानित्यता के कारण शब्दोत्पत्ति मान लिया है। इसके विरुद्ध वैयाकरणों ने शब्द-नित्यतावाद का समर्थन किया है। वस्तुतः स्फोटवाद शब्दनित्यतावाद ही है, जिसे वैयाकरणों ने नित्यतावाद। शब्द-नित्यतावाद को स्वीकारने के कारण ही नैयायिकों ने स्फोटवाद का खण्डन किया है। मीमांसकों ने भी वैयाकरणों की भाँति शब्दनित्यतावाद को स्वीकार किया है।